अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : ओमप्रकाश वाल्मीकि जीवन परिचय एवं साहित्य 1-17

प्रस्तावना

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म-तिथि एव जन्मस्थान

1.1.2 माता-पिता

1.1.3 बाल्यकाल

1.1.4 परिवार

1.1.5 शिक्षा

1.1.6 नौकरी

1.1.7 विवाह

1.1.8 संतान

1.2 ओमप्रकाश वाल्मीकि के व्यक्तित्व के कुछ पहलू

1.2.1 साहसी एवं सत्यप्रिय

1.2.2 वाचन में विशेष अभिरुचि

1.2.3 नाटकप्रिय

1.2.4 अभिनय में रुचि

1.2.5 अनेक भाषाओं का ज्ञान

1.2.6 अंधश्रध्दा के विरोधी

1.2.7 शिक्षा के लालसी

1.2.8 जाति में फँसे ओमप्रकाश

1.2.9 वाल्मीकि नाम का महत्व

1.2.10 दलित साहित्य के शीर्षस्थ रचनाकार

1.3 ओमप्रकाश वाल्मीकि का साहित्य

1.3.1 जुठन (आत्मकथा)

1.3.2 सलाम (कहानी संग्रह)

1.3.3 'घुसपैठिंये' (कहानी संग्रह)

1.3.4 'सदियों का संताप' (कविता संग्रह)

1.3.5 'बस्स ! बहुत हो चुका' (कविता संग्रह)

1.3.6 'अब और नही' (कविता संग्रह)

1.3.7 दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र

1.3.8 नाटक

1.3.9 अन्य

1.3.10 सम्मान

निष्कर्ष

द्वितिय अध्याय : दलित चेतना - स्वरुप एवं विचेचन 17

प्रस्तावना

2.1 दलित शब्द का आशय

2.1.1 'दलित' शब्द का संकुचित एवं व्यापक अर्थ

2.1.2 संकुचित अर्थ

2.1.3 व्यापक अर्थ

2.2 दलित : परिभाषा

2.2.1 ओमप्रकाश वाल्मीकि

2.2.2 मोहनदास नैमिशराय

2.2.3 नारायण सुर्वे

2.2.4 अर्जुन डांगले

2.3 चेतना शब्द का अर्थ एवं परिभाषा

2.3.1 नालंदा विशाल शब्दसागर में चेतना का अर्थ

2.3.2 समांतर कोश हिंदी थिसारस में चेतना का अर्थ

2.3.3 मानक हिंदी कोश के दुसरे खंड में चेतना का अर्थ

2.4 चेतना की परिभाषा

2.4.1 डॉ.एन.एस.परमार

2.4.2 ओमप्रकाश वाल्मीकि

2.5 दलित साहित्य का स्वरुप

2.6 वर्तमान काल में दलित

2.7 दलित साहित्य की विशषताएँ

2.7.1 दलित साहित्य नकार का साहित्य हैं।

2.7.2 वर्णव्यवस्था से उपजे जातिभेद का विरोध

2.7.3 दलित साहित्य समाज सापेक्ष हैं

2.7.4 दलित साहित्य समानता का आकांक्षी साहित्य हैं

2.7.5 दलित साहित्य सामाजिक परिवर्तन की उपज हैं

2.7.6 दलित साहित्य में विद्रोह की अवधारणा

2.7.7 दलित साहित्य में वेदना

2.7.8 आक्रोश - प्रतिशोध

2.7.9 दलित साहित्य संघर्ष से उपजा साहित्य हैं

2.7.10 दलित साहित्य में अनुभव

2.7.11 स्त्रियों के सम्मान और अधिकार

2.7.12 दलित साहित्य आम आदमी के जीवन का दस्तावेज हैं

2.7.13 दलित साहित्य विज्ञान और विकास का पक्षधर हैं

2.7.14 दलित साहीत्य की भाषा

2.7.15 मिथक

2.7.16 प्रतिमान - प्रतिक और बिम्ब
2.7.17 दलित साहित्य पर बौध्द धर्म का प्रभाव
निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : 'बस्स ! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह में चित्रित दलित चेतना 43-74
प्रस्तावना
3.1 गुलामी के प्रति विद्रोह
3.2 रुढ़ि एवं परम्परा के प्रति विद्रोह
3.3 जाति व्यवस्था के प्रति विद्रोह
3.4 अंधश्रद्धा एवं धार्मिक पाखंडता के प्रति विद्रोह
3.5 दलितों की राजनीति का चित्रण
3.6 दलित नारी का चित्रण
3.7 दलित शिक्षा व्यवस्था का चित्रण
3.8 दलितों की आर्थिक स्थिति का चित्रण
निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : 'बस्स ! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह का भाषासौंदर्य 75-95
प्रस्तावना
4.1 काव्यभाषा
4.1.1 तत्सम शब्द
4.1.2 तद्भव शब्द
4.1.3 देशज शब्द
4.1.4 विदेशी शब्द
4.1.5 अंग्रेजी शब्द
4.1.6 उर्दू, अरबी, फारसी शब्द
5.1.7 ध्वन्यात्मक शब्द
4.1.8 पुनरुक्ति शब्द
4.2 मुहावरें
4.3 लोकोक्तियाँ
4.4 काव्य प्रतीक
4.5 काव्य- बिम्ब
4.6 मिथकों का प्रयोग
4.7 शब्द शक्ति

4.7.1 अभिधा शब्द-शक्ति

4.7.2 लक्षणा शब्द-शक्ति

निष्कर्ष

उपसंहार 97-105

संदर्भ ग्रंथ-सूची 107-109

****